





|              |   |
|--------------|---|
| प्रकाशक      | भन्नी, सर्व सेवा संग,<br>राजघाट, वाराणसी                            |
| मसूदा        | प्रथम अप्रैल, १९६५, १,०००<br>द्वितीय अक्टूबर, १९६५, २,०००           |
| कुल प्रतियाँ | ६,०००   |
| मुद्रक       | जोम्प्रसाद कपूर,<br>चानमण्डल लिमिटेड,<br>वाराणसी ( उन्नाव ) ६ १० ४० |
| मूल्य        | रुपये ५० पैसे   |

|                     |   |         |      |       |
|---------------------|---|---------|------|-------|
| <i>Title</i>        | BINA BAHARI DUNIA KA<br>PAIDAL SAHAR              |         |      |       |
| <i>Author</i>       | : Satish Kumar                                    |         |      |       |
| <i>Subject</i>      | Peace Travel                                      |         |      |       |
| <i>Publisher</i>    | Secretary<br>Sarva Seva Sangh<br>Rajghat Varanasi |         |      |       |
| <i>Edition</i>      | First   | April   | 1965 | 3 000 |
|                     | Second  | October | 1965 | 3 000 |
| <i>Total Copies</i> | 6 000   |         |      |       |
| <i>Price</i>        | Rs 3 50   |         |      |       |

## शान्ति के समर्थकों को समर्पित

- हमने युद्ध के विरोध में दुनिया की पैदल यात्रा की ।
- हमने शान्ति और मित्रता के लिए विश्व के एक मित्र से दूसरे मित्र तक सफर किया ।
- दिल्ली से मास्का और वाशिंगटन तक की आठ हजार मील की पदयात्रा में हमें ऐम हजाग लोग मिले, जो हृदय से शान्ति चाहते हैं ।
- दुनियाभर के श्रमशील मानव एक जैमें हैं और वे युद्ध तथा अणु-ज्मनों का विरोध करते हैं ।
- शान्ति-यात्रा के सम्मरणा की अपनी यह पुस्तक मैं उन्हीं शान्ति के उपासक श्रमजीवियों का समर्पित करता हूँ ।

—सतीश कुमार



## प्रकाशकीय

सर पर दुनिया की गाफिल  
जिन्दगानो फिर कहाँ,  
निदगी गर कुछ रही  
ता नौबतानो फिर कहाँ ?

दो नौजवान—यूनीश कुमार आर प्रभाकर मनन एक दिन दिल्ली  
से निकल पड़ दुनिया की सर के लिए । पर यह सर सैलानो  
पन की हविम पूरी करने व लिए नहीं थी, यह थी युद्ध की  
विभीषिका स वस्तु जनता का अहिंसा और प्रेम का मदेश  
सुनाने के लिए आर मास्को परिस, लंदन, वाशिंगटन आदि में  
बैठे राजनेताओ स नि शास्त्रीकरण की अपील करने के लिए ।

और इतना ही नहा इस यात्रा की दा खविया आर था  
यह यात्रा थी दिक्क पैर की और दिक्क मकारी की ।  
पदल, पदल, पैरल ।

वहा दिल्ली कहा वाशिंगटन । वापू की ममाधि स शुरू हुई यह  
यात्रा, समाप्त हुई कैंतडी की ममाधि पर ।

भारत के दो शांति-यात्रिया का बिना पम का सारी दुनिया का  
यह पदल मफर साहस स तर ओतप्रोत है ही, अपारग्रह और  
शाखाहार के माग में आनेवाली बाधाओ स भी भरा पडा है । ये  
यात्री खमर दरें स भी गुजर हू, रेगिस्तानो से भी, बर्फीले मैदानो  
स भी और जंगलो स भी । पेरिस में इन्हें जेल की भी हवा  
खानी पडी है और अमेरिका में इन्हें पिस्तौल का भी सामना  
करना पडा है ।

पर, इन सार अनुभवो की प्रुष्ठभूमि में सबत्र एक बात मिलती है  
और वर यह कि इमान हर जगह इमान है । उसके दिल में हर  
इमान के लिए प्रेम है, महानुभूति है, दद है । वह सबके साथ  
प्रेम में मिल-जुलकर रहना चाहता है । उने युद्ध नहीं चाहिए,  
बनई नहीं ।

दा सवा दा वष की इस माहमिर पैदल यात्रा के माहमिर  
सम्भरण और कुछ मोठे अनुभव जा भी पट्टेया, मुग्न हुए बिना  
न रहगा ।

## क्रम

|                           |     |
|---------------------------|-----|
| भारत से प्रस्थान          | ७   |
| पटोमी देग पाकिस्तान म     | ३३  |
| जगूँ के देग               |     |
| अफगानिस्तान म             | ४७  |
| फला और कविता की           |     |
| भूमि इरान में             | ६०  |
| अमिरा फा क्रान्ति र दश    |     |
| सोवियत संघ म              | ९७  |
| पार्लैंड की प्राणमान      |     |
| जनता के बीच               | १७  |
| विभाजित चर्मनी म          | १७७ |
| उत्तिथम की मुत्तर गोद में | २११ |
| सगीत, मौदय और शृंगार      |     |
| की घरती प्रीम म           | २४१ |
| विचार म्नातय भी भूमि      |     |
| ब्रिटेन म                 | २४७ |
| यात्रिन् नगमोत्थ के देग   |     |
| अमेरिका म                 | ४   |
| पूँ और पश्चिम की          |     |
| समय भूमि जापान म          | ०७  |



भारत से  
प्रस्थान





पहली बार १९६२ में गाम को नयी दिल्ली में महात्मा ...  
 समाधि से जब हम पैदल रवाना हुए, तो हमने यह फैसला किया कि हम  
 फुदम-फुदम चलकर मास्को जायेंगे, पेरिस जायेंगे, लंदन जायेंगे और  
 आखिर में वाशिंगटन जाकर अमेरिका के युवा राष्ट्रपति से यह निवेदन  
 कर देंगे कि आप आनेवाली पीढ़ी को अणु युद्ध की मट्टा में भस्म होने से  
 रोकने की कोशिश काजिये। लेकिन आठ हजार मील की पैदयात्रा करने  
 जब हम ६ जनवरी १९६४ को वाशिंगटन पहुँचे, तो हमने देखा कि  
 राष्ट्रपति पत्नी एव हत्यारे की गोली के निशान हो चुके थे। वे राष्ट्रपति  
 के स्वतः भवन में नहीं, बल्कि सम्मान भूमि में सो रहे थे। हमने इतना  
 रुठिन और लम्बी यात्रा के बाद जिनमें मिलने की उम्मीद की थी, वे  
 जब राष्ट्रपति भवन में नहीं मिले, तो हम जागे रहे और हमने अपना  
 पैदयात्रा केन्द्र की समाधि पर जाकर पूरा का। हम राष्ट्र की समाधि में  
 चले और केनेडी की समाधि पर पहुँचे। जब राष्ट्र ने हिटलरों और मुसल  
 मानों को मिटाकर रखने के लिए कहा, तो एन हिटलर ने उह गोली से  
 उनका दिया। जब केनेडी ने सली और गोरी चमड़ी के लोगों को मिटाकर

गन्ने के लिए कहा, तो एक गोरी चमड़ावाले ने उह भी गोल से उठा दिया। समाज को आगे खाने के लिए जब जब कोई व्यक्ति प्रयास करता है, तब तब समाज ही कुछ प्रतिगामी शक्तियाँ उसे गले से लगा देती हैं। फिर भी, क्या वह समाज परिवर्तन का धाग को गेरने में कभी सफल हो सरी ?

अफ़ग़ानिस्तान के पहाड़ों, इरान के शिन्नाभा और रुस के बफ़ाई मदाना में २७-७ मील चलकर भी ऐसी यज्ञान मन महसूस नहीं की, ऐसी यज्ञान बनेटी की समाधि पर मुक्त महसूस हुई। हिंसा की इस शक्ति पर अभी भी हमारा भरोसा क्या कायम है जोर रही हिंसा का अभी भी सगठित रूप देने की हम क्या कोशिश कर रहे हैं, यह समझ में नहीं आता। जिसने गुरू बना, उस क्या इस रात का कल्पना भी थी कि इस गुरू का इस्तेमाल अब्राहम लिन्कन, महात्मा गांधी और जॉन कनेडी की छाती पर होगा। वांग ! गुरू को अच्छे और बुरे का भिन्न होता है या फिर वांग ! किनीज़ो गुरू बनानी हा न आती।

## यात्रा की तैयारी



आदिर जिस विचार ने हम इतना प्रेरित किया कि हम आदिर ने मास्को और वाशिंगटन की यात्रा पर यों पैदल ही निकल पड़े ?

सन् १९६१ की बात है, जब आणविक अस्त्र के खिलाफ प्रदर्शन का राकने के लिए कैंपेस्ट रसेल पकड़कर जेल में रने गये, तब रसेल ने नूनियामर के नागरिकों का आह्वान किया कि “आज थोड़े से, लेकिन शक्तिशाली शक्तियों के हाथ में मानवता का भविष्य कटपुतली मान बन गया है। इसलिए सामान्य-से-सामान्य मानव का यह कृतव्य है कि वह लड़े और इन ‘बड़ों’ द्वारा किये जा रहे मानव प्रातक पड़्यत्र का भण्डापोड कर।” यह आह्वान जिसने भी पढ़ा या सुना होगा, उसके हृदय के तार एक बार ता अवश्य ही झनझना पड़ेंगे। हमारी भा

नयी स्थिति हुई। हमारे मन में भी एक सवाल पनप गया कि “क्या हम इस समय चुप बैठने का हक है?”

जब अमेरिका के कुछ तरुणों ने सानफ्रांसिस्को से मास्को तक का रास्ता का, अपना रास्ता पर पचास हजार डॉलर खर्च करके सभारन लोगों को जापानिक हथियारों की पुटदौट पर पाकन्दी लगाने का आवाज उठाने के लिए तैयार हो जाने का कहा, तो मुनिगामर के “जान्ति प्रेमिया” का मन जोग से भर उठा होगा। वही स्थिति हमारा भी हुई। दिमाग में एक प्रश्न उठा कि “क्या हम भी ऐसा ही रास्ता प्रयत्न करना चाहिए?”

म. प्रसाद में था और मेरे साथी प्रभाकर गैंगलोर में। जब म. प्रसाद से रिजनीडम आश्रम में रहने के लिए गैंगलोर गया, तो स्टेशन पर ही प्रभाकर मुझे लेने आये। गैंगलोर पहुँचने के बाद हम दोनों गहराई से विचार विमर्श करते गये। हमने देखा कि हम दोनों के मन में एक ही तरह की चिन्ताएँ जा रही हैं। जैसे तो पिछले ७ वर्षों से हम दोनों एक-दूसरे के सम्पर्क में रहे हैं, पर इतनी निकटता से साथ रहकर काम करने का अवसर हमें और अधिक निकट ले आया। नवम्बर १९६१ की बात है। गैंगलोर के एक रेस्तराँ में म. और प्रभाकर फोंका पी रहे थे। प्रभाकर नेरल के हैं। म. राजस्थान का। दुमाग्र में म. दक्षिण का कोरा भाषा नहीं जानता, पर प्रभाकर उसी ध्वारी हिन्दी बोलने हैं कि यभी-यभी मेरी हिन्दी भी उनके सामने परमान लगता है। फोंका पीते पीते बात निम्नी—जापानिक निश्चायकता का। प्रभाकर बोले “नेकिन भारत का योगदान इस आन्दोलन में बहुत कम है।”

मैंने कहा “इसका एक कारण यह हो सकता है कि भारत जिम्मा मानने गुट में नहीं। भारत-सरकार की नीति जगु-जगु के खिलाफ है। इसलिए जनता और सामानिक कार्यकर्ताओं का ध्यान उस ओर बहुत कम है।”

प्रभाकर ने फिर कहा “जैकिन हम निश्चायकता आन्दोलन के अन्तर्गामीय रोल को खाने के लिए कुछ ता करना है चाहिए। क्या न

दुनिया का पैदल सफर

हम जिन्नी से मास्का, पेरिस, लन्दन और वाणिग्यन तर की पर यात्रा करें ?”

प्रभाकर के मुँह से ज्वानक एक साहसमयी बात फूट पड़ी। मन तुरत प्रभाकर की पीठ ठकी “शाश्वत ! तुम्हारी बात मेरे मन में तीर का तर्क चुभ गया है।”

मेरी बात सुनते ही प्रभाकर का जाग बंद गुना गूना गया। रोते “पर क्या हम दो ही दसके लिए काफी हैं ?”

मैंने कहा “मेरे मित्र, सत्ता पर न जाओ, गुण पर जाओ। अगर हम सच्चे दिल से काम करेंगे, तो १ और १ मिलकर २ न। यदि ११ जमे होंगे।”

इसी बातचीत में हमने तीन कप कॉफी पी डाली। बात पक्की हो गया।

## भाषा की समस्या

मेरे सामने एक समस्या थी। मैं १० साल की छात्री उम्र में जन-साधु बना दिया गया था। इसलिए स्कूल में बहुत तीन क्लास तक शिक्षा पायी थी। मैंने स्कूल में अग्रेजी नहीं पढ़ी। साधु बनने के बाद तो मेरी शिक्षा धर्म ग्रंथों और मस्तक तक ही सीमित रही। १८ साल की उम्र में मैं जन साधु का जीवन गटकर सहायक जन्मालन में विनाराजी के पास चला गया। इसलिए अग्रेजी की शिक्षा मैंने सिद्ध नहीं पायी। जन मन प्रभाकर के साथ वह तर किया कि हम साथ जाणवित अन्धा की अधी प्रतिप्राप्तता के खिलाफ शिक्षा की बद-यात्रा करके, तब मेरे सामने मसाला जाया—भाषा का। क्या बिना अग्रेजी के यह यात्रा सम्भव है? मेरे मन का हान भाव मुझे जन्म जन्म रगता रहा। हमारे प्रिय भन नता जान मानसिक दृष्टि में हम स्तिता कमचार और गुलाम बना दिया है, इसका जन्माम मुझे हाने लगा। अग्रेजी का हमने

उसी दस वना दिना है, माना उहा मय कामों का सिद्ध करनेवाला है । जो अंग्रेजी नहा जानने, ये अपन आपकी कमजोर, धन और अस्वास्थ्य मद्दयस करते हैं ।

प्रभाकर ने कहा “भाषा की कतई चिन्ता मत करो । हम तो केवल प्रिन्टन या अमेरिका उहा जा रहे हैं । हम तो मरने पहले पारसा जीव स्त्री भाषा लोगों से मिलना है । चिन्ता केवल अंग्रेजी के लिए नहा, गर्मी भाषाओं के लिए करो ।” या मेरा मन आनन्द तो हुआ, फिर भी एक सतर्कता रना हुआ था । लेकिन जब हम ७ हजार मील की पर-यात्रा कर, सारह विभिन्न राज्यों की पार करत हुए अमेरिका पहुँच गये, तब अंग्रेजी के प्रति मेरे मन में जा आत राखनाई खड़ी था, व सच धुल गयी । मन का सतर्कता मिट गया । फिर पर चला अंग्रेजी का मत उतर गया । अंग्रेजी अंतराष्ट्रीय भाषा नहा है, यह स्पष्ट हो गया ।

हमने अफगानिस्तान और इरान में पाँच महीने तक पर-यात्रा की । दस पाँच महीनों में अंग्रेजी ने स्त्रीमर साथ नहा लिया । हमने एतावना पुस्तक जोगिनी करके पारसा सीखी और उस टूटा-फूटी पारसी ने ही हमारा काम बनाया । चार महीने तक हम सोवियत-भारत में रहे । उहाँ भी हमने कहीं भाषा सीखी । शुरू शुरू में कुछ कष्ट हुआ । पर जो तमाम सतर्कता था, वह अंग्रेजी न जानने का नहीं, बल्कि स्त्री न जानने का था ।

केवल १६१५ करोड़ लोगों की मातृभाषा अंग्रेजी है । प्रिन्टन और अमेरिका में भी सच लगा की मातृभाषा अंग्रेजी नहीं है । हिन्दी भाषा लोगों का सच्चा भाषा हमें कम नहा । इस में यदि हम अंग्रेजी के दुभा दिया मित्र तो हिन्दी के भी मित्र । मास्को रिपब्लिकन में मर भाषण का अनुवाद करनेवाला उहा की हिन्दी दतना गुड जीव धाराप्रवाह था । मुझे मरागा नहीं हुआ कि वह हिन्दी भाषी नहा है । मैंने मास्को विदेश रिपब्लिक में भाषण दते हुए एक जगह कहा “मैंने सी अनन्त ‘हमारा’ का मत करती है ।” तुम्हें हा टुमापिना उहा ने मुख रोक्ते हुए कहा “हमारा मत ? या ‘हमारा’ मत ?” में आश्चर्य में पड़ गया । उहा

तरुणी श्री शुद्ध हिंदी देगन्तर । उसने मुँह में शुद्ध भारतीय स्वर में भीरा राग के भजन सुनकर तो मैं चर्चित ही रह गया । ल्यूदमीग नाम की यह दुभाषिया रहने हम अपने विदेशी भाषाओं के महाविद्यालय में ले गयी, जहाँ पचासा विद्यार्थी घटल्ले में हिंदी पोलते हैं । इसी तरह पेरिस में हमारे भारतीय राजदूत ने बताया कि वहाँ संस्कृत और हिंदी का जैसा विद्यापीठ है, वैसे विद्यापीठ भारत में भी कम ही होंगे । जापान में भी टोकियो और ओसाका विश्वविद्यालय में हिन्दी का अध्ययन की विशेष व्यवस्था है । जब कि भारत के एक भी विश्वविद्यालय में जापानी सिखाने के लिए कोई विभाग नहीं है । उसी तरह अन्य देशों में भी हिन्दी का पाठ चल रहा है, पर हमारे अपने ही देश में अपनी ही भाषा उपेक्षित और अनाथ पड़ी है । जमनी और फ्रांस में हम वहाँ की भाषा नहीं जानते थे, इसलिए अभी कभी तो तिनभर हम कोई बात करनेवाला तक नहीं मिलता था । अंग्रेजी के बारे में हमने जो ऊँची ऊँची कल्पनाएँ सोच रखी हैं, वे सब वास्तविक नहीं हैं ।

इस बीच मैंने पारसी और रूसी की भाँति अंग्रेजी का भी अध्ययन प्रारम्भ किया । हालाँकि मैं व्याकरण नहीं जानता, अंग्रेजी में लिखने का भी अध्ययन नहीं, लेकिन अंग्रेजी में बात कर सकता हूँ, भाषण कर सकता हूँ । हम किन्हीं भाषा से नफरत नहीं । हम सभी भाषाओं का सम्मान करते हैं । अधिक से अधिक जितना भाषाएँ शायद कर, अवश्य सीख । परन्तु अपने देश की उन भाषा को उपेक्षित करके किसी एक ही भाषा में गुलाम बन जायें, यह ठीक नहीं । जो भाषा अंग्रेजी नहीं जानते, वे अपने में हीन भाव अतएव न महसूस करें । यह पावन मुक्त अपने अनुभव से मिला है । मैं अंग्रेजी नहीं पढ़ता, पर मैं विद्वान बनने में सफल हुआ ।

मित्रों का सहयोग



हमारे समय पहले प्रिण्ट रसेल का और अमेरिका के उन तरुणा का पत्र पिया, जिन्होंने मानवतामित्रों से भास्कर की यात्रा का थी । दोनों ने

तुरत हम उत्तर दिया। स्मेल ने लिया कि “आपने मन म यह बात जानी, यही हमारे लिए बड़ी प्रेरणा की बात है। जरूर योजना बनाइये और आगे बढ़िये।” अमेरिका के तरुणों ने लिया “स्वागत है आपका। वम, मन को पकड़ कीजिये। बिना गटे-बटे नताओं की तरफ तान अपनी योजना पर अमल कीजिये। सफलता आपके चरण न्यूमेगी।” साथ ही साथ उन दोनों ने यह भी लिया कि “हम अपने क्षेत्र में आपकी यात्रा का पूरा प्रबंध कर रहे।” उस, हमारा निवार पत्र हो गया।

हमारे दल के नेताओं के आशीर्वाद का समाल भी सामने था। क्योंकि विदेश यात्रा में अनेक औपचारिक दिक्कत आती है। हमने स्व. प्रधानमंत्री पं० नेहरूजी को लिया। वे उन दिनों आम चुनाव के कारण बहुत व्यस्त थे। फिर भी उन्होंने हमें तुरन्त उत्तर दिया “इसने परिणाम के बारे में मैं अनिश्चित हूँ, पर आपका आदेश जैसा है। आपका साहस मुझे प्रभावित आया। यह काम बहुत जरूरी है।” इसी तरह डॉ० राधाकृष्णन् ने भी बड़ा उत्साहपूर्वक संदेश भेजा। प्राप्ति के काम में लगी हुई विभिन्न समस्याओं को जब हमने अपनी योजना बताया, तो सभी समस्याओं ने हम पूरा पूरा समर्थन और सहयोग प्रदान किया।

इन भारी तैयारियां वे आद प्रदान था— विविध संयोजन का। सत्र के अंत का लम्बा समय, आठ हजार मील की लम्बी पैदल-यात्रा, पूरे विश्व की परिस्थिति, इसके लिए कितना धन चाहिए।

इस काम के लिए किसी समस्या से अथ याचना कर, यह भी हम नहीं जानें। हमने यही निष्कर्ष किया कि कुछ भी हो, इस काम के लिए न किसी संगठन से धन लगे, न सरकार से या किसी निधि से कोई मदद मांगेंगे और न कोई जवाब देंगे। जो मित्र व्यक्तिगत रूप से हम जानते हैं और मित्रता से जानते हमारी मदद कर सकते हैं, वे उन्हें वहीं से हम गढ़ावता लगे। उस रात मैंने उत्पत्ता के अपने मित्रों के सामने इतना बड़ी यात्रा के लिए होनेवाले भारी व्यय का सवाल रखा। यों व्यापारियों के सामने पैसे का प्रश्न बड़ा कठिन होता है, परन्तु मुझे यह देखा



जाश्चय हुआ कि खलसत्ता के मेरे मां की मिना मिनी शिखर व दूर प्रसार  
रा खच उठाते के लिए तैयार हो गये। मिनी मुद्रा प्राप्त कर रा  
सगल जटिल था। मारख सरभार व तत्कालीन रिक्त मंत्री श्री मोरारजी  
देसाई ने विदगी मुद्रा देने में स्तम्भार कर दिया। पर स्तम्भार के माया  
गोरे कि जाय फोट चिन्ता न कर। विदेश में ही जायमा पैसा मिल जाय  
और टायलस चेंज के रूप में आप यह पैसा साथ में रख सक, ऐसी  
परस्था हम कर देंगे। मिनी की तरफ से इतना जा जासन और भरोसा  
मिलने के बाद मैं निश्चित तो हो गया था, परन्तु यह बात मन में धरातर  
गन्तव्य थी कि इतने खच का गलत मित्र मटगी पर उसे डाल जाय।  
लेकिन मिनी का सहयोग श्रीराम करने के अलावा हमारे सामने एक  
कोट चारा भी तो न था।

## पत्नी का साहस



मुझे विवाह दिव्य अभी मालूम भी न था। मैं इतनी लम्बा  
अग्रिम के लिए पत्नी से कैसे दूर चला जाऊँ, यह भी रटा कठिन प्रश्न था।  
उन दिनों जब मैं और शम्भार विन-यारा की यात्रा बना रहे थे मेरी  
पत्नी प्रत्यक्ष न लिए पीहर गया हुआ थी। उस मातुल और तातुल समय में  
जगर में अपनी पत्नी से इस विन यात्रा पर निरलन की बात कहूँगा तो  
उसका मन पर ईसी गुजरगी, यह साचते ही मेरा मन कुछ आश्चरित हो  
लगा था। दृग्गिण दिन पर दिन, सप्ताह पर सप्ताह, यहाँ तक कि महीना  
भी बीत गया। यात्रा के विभिन्न पहलुओं पर हम विचार विमर्श करने  
गये, पर इस यात्रा का हृदय मेरे मन का उदा सून पा रहा था कि गर्भिणी  
पत्नी को इतने लम्बे समय के लिए विवाह में डालकर उसे जाऊँ? मुझे  
अपन जाय पर कुछ बाध भी आ रहा था कि जागरि एम मौन पर ऐसा  
यात्रा करने उनायी हा क्यों? मेरा क्रोध था पूरी पुण्य-जाति पर। सभी  
बात और अन्यास के बहाने, अभी साधना और तपस्या न रहान, कभी

पन्ना और यापार के बहाने पत्रियों का घर पर डाटकर जाने की परम्परा नयी नहीं है। म भी तो ऐसा ही करने जा रहा हूँ। जितनी तटप मुझे इस त्रि व यात्रा पर जाने की थी, उससे कम तटप पत्नी के साथ रहकर उसका स्नेह पाने के लिए गई था। इसलिए मने लम्प पसापेन के बाद अपनी पत्नी को ढिल धामनर एन पन लिखा

“प्रिय लता,

आज का पत्र प्रतिनिन के पत्रों जेसा पत्र नहा ३। आज के पत्र म स्नेह डलाहने की गतें नहीं लिखनी हैं। तुम्हें ताजपुर मे डारू देनेवाली एक विचित्र सी योजना आज लिख रहा हूँ। म जानता हूँ कि यह योजना तुम्हारे मन को चोट पहुँचायेगी। फिर भी उसे लिखने का साहस कर रहा हूँ। जब तक इस योजना पर तुम्हारी मुहर नहा लगेगी, म उस पर जोर निर्णय नहा करूँगा।

योजना यह है कि प्रभाकर और म दिल्ली से मास्को और वाणिगटन की शांति पद यात्रा करना चाहते हैं। एक तरह से यह त्रिभुज यात्रा ही हो जायगी। इसमें कम से-कम दो पत्र का समय लगेगा। यदि तुम पूरे मन से राजी होकर आना दोगी, तभी मैं अन्तिम रूप से तय करूँगा। आज दुनिया में जो गल्ल प्रतियोगिता चल रही है, उसे ग्यामोश त्रैटनर देखते रहना मुझसे होता नहीं है। मनुष्य-समाज का एन सदस्य हाने के नाते मुझे भी अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी के रूप म कुठ न कुठ करना चाहिए। भले ही मेरा प्रयत्न ‘नफ़ारताने म तृती की आयाज’ की भौति मिलीन हो जाय। मेरे मन की तटप स्पष्ट है, पर तुम्हारे अधिकार म म पहला म्यान देता हूँ।

पत्र म उत्तर लौटता टाग मे देना।

तुम्हारा म्महमय  
मर्तीशकुमार”

मेरा पत्र पाते ही लता ने जो उत्तर दिया, वह पन्ना म आश्रय म पड गया। लता ने लिखा था

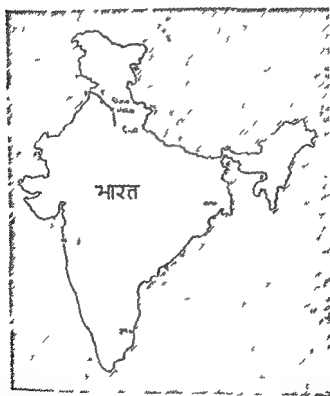
मे अधिक लोगों से मिलना चाहत है और दूसरा यह कि वह अधिक जागृत तथा सज्ज न राखा है।”

इस प्रकार रास्ते की जानकारी, यात्रा का मतलब न तैयारी, मिशन दृष्टान्त के सम्बन्ध में थोड़ी चर्चा करने के बाद रिनोस ने पृष्ठ पर लिखा कि “कल तक तो साथ रहोगे न?” हमारे “हाँ” कहने पर गले “अच्छा, कल यात्रा में चलते समय बात करेंगे। उस दिन प्राथना प्रयास में रिनोस ने हमारे लिए अत्यधिक प्रेरणादायक प्रवचन दिया। ‘मैं जानूँ हूँ कि हमारे सामने बड़े हैं’ गीत गायन में उन्होंने प्रारम्भ किया और फिर निष्कर्षार्थ, ‘तुम्हारे अन्तर में निवास कर रहे हैं’ और उनका प्रयास, युद्ध की तैयारियाँ जादि न सम्बन्ध में करीब एक घण्टा तक वे चले जाते रहे।

आखिर हिन्दुस्तान का एक मित्र है। पहला, नदियाँ एवं सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों से भरा हुआ वातावरण सुष्टि के चिर सौन्दर्य की अनुभूति कराता रहता है। हमें शान्त चित्त प्रदान करता है। रिनोस की यात्रा ने गायों का गन्धर्व कर दिया था। गायों में रहकर गायों का सा जीवन जीकर रिनोस निम्न तरह काम कर रहा है, वह सम्पूर्ण देश के लिए और विशेष रूप से राजनैतिक गोंड पंचायत में व्यस्त रहनेवाले तथाकथित नेताओं के लिए अद्भुत प्रेरणादायी है। एक व्यक्ति जिसे उम्र से शरीर से, हर दृष्टि में आराम की जरूरत है, तरह-तरह के कष्टों का सामना करते हुए मानसिक काम कर रहा है। यात्रा में चलते समय, प्रवचन करने समय कभी भी गायों का करीब रहकर बातचीत कर जाती है। गायों के सन्तान उत्पन्न रहते हैं, पर रिनोस कहते हैं कि “ग्राम स्वभाव की प्राप्ति तक मैं हमेशा तब तक चलता रहूँगा।” इस देश में केवल एक रिनोस ही है, जो आज १३ साल से राजसूरी में रह रहा है और लालकृष्ण के मंदिर में प्राण अर्पण के लिए चल पड़ा है।

यह है हमारी प्रेरणा का दीप्तमय, जो हम जगत् का गन्धर्व प्रेरणा दे रहा है। आज देश के अधिकांश लोग सामान्य जीवन में मुँह मोड़कर

नौकरी, उद्योग, ग्याना पीना सोना, नवन म ही रूँध गये ह। आज 'पुन  
भाया-मोपण' तक ही कर्तव्य की प्रतिबिम्ब मान ली जाती है। इन सीमित  
नायकों के इन्द्र गिद ही हम सब घूमते रह जाते हैं। ऐसे वातावरण में  
हमारी ज्ञानि-ग्याना के लिए विनोय का आगमन और उनका सक्रिय



प्रणाली हम उठने, चलने और 'कुठ' करने की स्फूर्ति दे रहा था। विनोय  
स मिलने के बाद हम लगा कि जब उन पैसा यदि इतने मालों में  
लगातार घस गया है, तो हमारे पैसा तर्कों के लिए दो माल का पद

दुनिया का पैदल मफर

यात्रा में रान सी बठिनाई है ? हमने पदयात्रा में मिनीया के साथ चलते समय विचार में गतों का, तो उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों पर दिये

“रास्ते में पानी तो साथ रखोगे ही ?” मिनीया ने पूछा ।

“जी ।”

“पानी नदी गरम पीने की काशिश करना । गरम पानी स्वास्थ्य के लिए ठीक रहेगा, हल्का आर सुपाच्य रहेगा तथा नाना प्रकार के पानी से जो परेशानी हो सकती है, वह नहीं होगी ।”

“हम कोशिश करेंगे ।”—हमने कहा ।

“आहार के सम्बन्ध में क्या सोचा है ?”—मिनीया ने पूछा ।

“जाप जानते ही हैं कि हम डोना ही गाकाहारी हैं । जप जाप ही मुचाइये ।”—हमारा प्रतिप्रश्न था ।

“हाँ, यह गीत है । शान्ति का आर जप का तुम्हारा जो ‘मिनी’ है, उसने लिपि गानाहार पणत सहायक है । पर हमसे तुम्हें कुछ शारीरिक कष्ट का सामना करना होगा । यदि तुम लोग इस समस्या से पार पा गये, तो तुम्हारे ‘मिनी’ को यही मल मिलेगी ।

मिनीया के इस उत्तर पर हमने कहा “हम भी ऐसा ही सोचते हैं और हमें भरोसा है कि हम ‘मिनी’ में जाप का सगह के अनुसार चल सकेंगे ।”

मिनीया ऐसे की यात्रा ।

●  
“जितने पैसे साथ लेकर जा रहे हैं ?”—मिनीया ने पूछा ।

“हम तो जनता में भरोसे जा रहे हैं । जाता है साथ काम करना है । लोग हमें गहरायेगे, खिलायेंगे, हर तरह की मल करेंगे । फिर भी डाय, मल और अनिष्ट जल्द ही पूरी करने के लिए धैर्यवान् ऐसा हम साथ लेंगे ।”

“हाँ ।”—मिनीया ने हमारी इस बात पर कहा “या तो तुम पूरे रास्ते का प्रबंध साथ रखो या बिल्कुल पैसा न ले जाओ ।” मोटी दर

नुप रहकर फिर जोड़े “यदि तुम्हारे साथ पैसा नहा गेगा, तो जनता स्वयं तुम्हारा मदद करेगी। इतनी लम्बी यात्रा पर जा रहे हो। देश दंगा तर में तुम्हारी रक्षा के लिए मैं तुम्हें एक चक्र देता हूँ। चक्र यही कि अपनी जेब में एक पैसा भी लेकर मत जाओ। हमने साथ ही गाका हार रूपी गदा तुम्हारे पास है ही। यह गदा और चक्र तुम्हें सफलता प्रदान करेंगे।”

आकाश काटे राइलों से भरा था। हरे भरे पेड़ पौधा से आसाम की धरती सँवरी थी। ऊँची पवन श्रेणियों की ओर जाती हुई टेढ़ी मेढ़ी सड़क पर विनोबा हमारा हाथ परकड़र लम्बे लम्बे टग भर रहे थे। हम ऐसा लगा, मानो विनोबा हमारा हाथ परकड़र हम यात्रा करता सिंगा रह हो। सचाइ भी ता यही थी। वे हम मोड़ दे रहे थे। वे मध्य सवाल को उठाते थे और स्वयं ही उनका समाधान भी करते थे। एकाएक उठाने हमारे कंधे पर हाथ रखा। दो मिनट मौन रहे। फिर प्यार से हमारी तरफ देखा। हम कुछ समझ नहा। इतना जरूर लगा कि हमारी रात चीत करीब करीब समाप्त हो गयी है, लेकिन कोद जित्तिम सींगर विनोबा हमें देना चाहते हैं।

“सारी जनता शान्ति चाहती है और तुम लोग शान्ति का ‘मिशन’ लेकर जा रहे हो, तो जनता पर विश्वास रखकर जाओ, यह तुम्हें कष्ट में नहीं पड़ने दंगी। देशों की सामाजिक धरती और जमान के बीच भले हा, जागृमिया के दिना में कही नोद सीमा या भेद नहीं।” एक लंग रकड़र विनोबा ने अपना विचार स्पष्ट किया “जनता के साथ सीधा संपर्क होने में पैसा बाधक होता है। मैं तो पूरा सर्वोदय आन्दोलन जनाधार पर चलाने का विचार रखा है। तुम्हारी पदयात्रा के लिए भी मैं यही मार्ग सुझाता हूँ। मुझे जनता पर पूर्ण विद्वान है। तुम लोग एक प्रयोग के तौर पर इस आजमाओ। जाओ, तुम्हारी यात्रा के लिए मेरा पूरा आशीर्वाद है।”

माना-मीना तो च- जायगा पर रित्री पत्र के लिए क्या होगा ?  
 जून दूज जायगे तो क्या होगा ? कपट पट जायेंगे तो क्या होगा ? हम  
 भी भयकर सदा से जवन के लिए गरम उपद्रव कहाँ से जायगे ? जाल  
 न- जायगे तो हजामत कैसे बनगी ? कहीं बीमार पड़ेंगे तो न- का क्या  
 होगा ? और सब जाने गीजिय, पर साबुन तो प्रतिदिन चाहिए । मिनाश  
 सत हैं, आद-आद हैं, पर इन व्यामिश्र कठिनाइयों का सामना तो  
 हम ही करना होगा ? ? ऐसे क मिना इतनी लम्बी यात्रा जैसे ममकिन  
 है ? इस तरह मा ही मन अनेक मजदुर विक्ष- उत्तर हाते रह । फिर  
 मन्त्रि- न त- मिना—आपिर यहाँ पर कैसे कटों से जायेंगे । मित्रों से  
 ही तो पत्र करगे । तो फिर क्या जिन देशों में हम जा रहे हैं, यहाँ के  
 लोग हमारे मित्र नहा, मित्र ह । यह 'ता' जहाँ भी जाता है, न-  
 धार कर देता है । न- सत्मान पट जायगा 'तो' क्या होगा ? कल  
 मोत न जायगी 'ता' क्या होगा ? उस तरह मोचने से क्या कभी नाम  
 चलता है ?



मान- न य- ता- प्रात- ह- की कमचोरिया पर ग गया ।  
 आगम भी पहाडिया म क- हुए गदल फिर एक बार दि- म मर-  
 उट । भर- गर्मी म लगी हु- दिल्ली की सड़कों पर पहली न- १९६५  
 का न- ग- उनी । पु- ह- न उ- अलमाये हुए गरीर म  
 चतना मरने लग । जमना न किनार बिगुनद्रा म साये राष्ट्र की ममाधि  
 पर हम ग- थ । मिनाश न हम अपना जागीराद दन न पड़े न-  
 और गदल भी मापी म जो गीर दी थी, उमरी पा- दिला न लिए  
 ही माना राष्ट्र की ममाधि पर भी क्या और गदल दानों उपस्थित थे ।  
 हम लगा, जैसे राष्ट्र चुपचाप हम कह रहे हों कि "जनता राष्ट्रों की  
 तरह उदार है और न- की तरह मुग्ध शीतल ।" मिनाश राष्ट्र । राष्ट्र  
 मिनाश । लोगों ने मिलकर हमारे मन मन्त्रि- का साहम से भर दिया  
 और हमन निष्प- किया—“हमारी यात्रा जनाधार का एक प्रयोग मन ।

पैसे का आधार हम डोढ़ते हैं। पूरा यात्रा में नहीं, अभी भी हम पैसा स्वीकार नहीं करेंगे।”

यह गुप्तार का दिव्य था। इसी दिन सायंकाल गांधी ने सत्य आग जाति का शोध में जीवन-बलिदान किया था। पहली जून '६२ को भी गुप्तार था। सायंकाल प्रायना के लिए राजपट्ट पर हम सब एक्जट हुए। प्रायना के राह हमारी काचा मुक्त पत्थरों प्रारम्भ हो गयी। हम अपने पथ पर चल पडे।

हमारा यात्रा में पैसे ग्रहण करने का आग्रह जगह जगह होता रहा। पार्लियामेंट का हमारा पन्ना पड़ा था लाहौर में। वहाँ फोर्द भी व्यक्ति हमारे लिए परिचित नहीं था। वहाँ भी हम एक युवक से मिले। उन्होंने हमारी सारी व्यवस्था की और चलते समय त्रुटि हमारी चेहरे में पार्लियामेंट सिक्के रख दिये। वे थे भी गुलाम यूसीन, जिन्हें किसी तरह समझा हुआ हमने रुपये वापस किये। पार्लियामेंट के राह अफगानिस्तान पहुँचे। जलालाबाद में दैनिक 'निर्ग्रह' के सम्पादक श्री नरहमान ने कहा “जाति-यात्रा के लिए हमारी कुछ तो मदद स्वीकार कीजिये ही”, और अफगानी सिक्के पेश कर दिये। काबुल में भाद अमृतलाल की दरान पर हम बैठे। वे हमारी यात्रा की योजना से इतने प्रसन्न हुए कि भाउक रनकर उन्होंने दूकान के 'कैश बॉक्स' में से मुट्ठीभर अफगानी मुद्रा बिना देन, बिना गिने निकालकर हमारे सामने रखे। “मुझे सेवा का मौका है।” उनकी दूकान से एक एक पाउण्डनपेन लेकर हमने उसे धमा मोंगी। “पैसा नहीं, अपना स्नेह ही हमारा जाति है”—कहकर हमने उसे समझाया। काबुल के हमारे मजदूर श्री रामलाल आनंद और भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव श्री मुरगेन का यह तर था कि “पैसा चलने का एक आग्रह ही पयास है। पैसा रखने में आपत्ति ही क्या है? साधारण तौर पर सब मन कीजिये, पर अभी वक्त व वक्त के लिए कुछ मुद्रा पास में रख लीजिये।”



हम इरान में पहुँचे तो गौंरदे कानूस के एक ठड़े जमींदार कप्टेन हुनरवर ने और तेहरान के व्यापारी श्री शोभानी ने कहा “हम लोग एमे ही मैकटा इजाराँ रख करत रहते हैं। यदि आपकी यात्रा में हम कुछ मदद कर सकेंगे, तो हमारा चित्त बहुत प्रसन्न होगा।” पर हमने कहा “हम राठभर के जातिथ्य से ओर आपकी सहानुभूति से जो मन्द मित्रगी, हमकी तुलना कितनी भी बड़ी धनराशि में नष्ट का जा सकती।” वाराणसी से श्री सिद्धराजजी ने तेहरान स्थित भारतीय राजदूत की रिप्ता कि “उन् पैसे की जरूरत हो तो आप मुहय्या कर, हम यहाँ से उसका प्रबंध करेंगे।” तेहरान पहुँचते ही हमारा राजदूत ने हमारी पैस की आश्चर्यता के बारे में पूछा। पर, हमने बताया कि “दिल्ली से तेहरान तक बिना पैसे के हम पहुँच गये। हमें इतना अच्छा लगा कि पैसे की जरूरत भूल ही गये हैं। यदि किसी स्लू की हम आवश्यकता होगा, तो हम आपकी स्तायेंगे। पर पैसा हमें नष्ट चाहिए।”

इरान के बाद हम मोरियत शहर में पहुँचे, तो स्थानिक की जन्मभूमि गोरो में रात को गहरा नी एक टैक्सी ड्राइवर ने हमारा दरवाजा खट खटाया। उसने कहा “मने जगत्गारों में आपका शेर में पत्ता है आज दिन में मने आपकी सड़क पर दगा। आप कहाँ टहरें, हमना पता लगात-लगाते अब यहाँ पहुँचा हूँ। ये २० रुबल (करीब २०० रुपये) आपका भत्ता करना चाहता हूँ।” अपनी भट बापस ले जान के लिए उधर गयी कन्तिनाद से हम राजी कर पाये। मोरियत शान्ति पार्गपद् न प्रतिनिधि एलकनगट्टर इंसानाचिच पगलीन ने मुन्मुमी गगर में जाकर कहा “हम जाशय होता है कि आप कमे रिता पैस के रिप्ता से यहाँ तक पहुँच गये? ये लाजिय ४० रुबल (करीब ४०० रुपये)। कहा भी जरूरत पन्न पर इन्मेगाल कीजिय। भरोच का बात नष्ट। आप हमारा अतिथि हैं और अतिथि को कष्ट होना से हम बहुत रुष्ट होता हैं।” उन् किसी तरह समझाया कि “कष्ट पैस रखना से होता है, न रखने से नहीं।” एस रिता ही प्रसंग यूरोप न अमेरिका में भी आय, जब हमारा अनजान

मित्रों ने जाने पढ़ाने मित्रों की भाँति ही हम प्यार लिया, अपनान लिया और हर प्रकार की मदद करने के लिए उत्सुकता दिखायी।

## सुमीनरों



बिना पैसे की यात्रा में कभी नभा कठिनाइयों का जाना भी स्वाभाविक ही है। एक बार अज महीनेभर से भी अधिक समय तक हम भारत के लिए एक भी चिट्ठी नहीं लिख सके, तो तहरान के दूतावास में तार और चिट्ठियों के ढेर लगा गये—हम रुहों रो गये, इसका पता लगाने के लिए। कदा दशान ने भयंकर मूसल की चपेट में तो नहीं आ गये, इस संदेह ने मित्रों और परिवारवालों को चिन्ता में डाल दिया। तीन महीने तक एक मात्र इजाजत न मजबूत पाये, तो तेहरान के एक मित्र ने कहा “क्या अणु अणु पर प्रतिबंध न लगने तक बाल कटवाने की कसम खा ली है?” एक बार दो गाँवों में जगह न मिलने पर सामन के होटल में इसीलिए नहीं ठहरे कि चेन्नै चाली थी।

इसी तरह लगातार तीस घंटे तक भोजन न मिलने पर भी इसीलिए चरते हाथ कि होटल में जाकर खाने का रास्ता मिले कहाँ ने चुनाया जायगा? गरीब किसान-परिवारों में बिना दूध चीनी की चाय और सूखा रोटी खाकर घबरे हुए गरीबों की शरण में इसीलिए साप देते थे कि अन्ते और पौष्टिक भोजन के लिए पैसे की शरण में जाना हमें स्वीकार नहीं था। परन्तु ऐसे कठिन आसनों में भी मन का एक सतीत मिलता था, तृप्ति मिलती थी और इसीलिए यात्रा का प्रति नभा अनुत्साह पैदा नहीं हुआ। सच तो यह है कि ऐसे रूढ़ प्रसंग आनन्द-प्रद प्रसंगों की तुलना में नगण्य है।

समस्त दिलचस्प बात यह है कि हम अपनी आवश्यकताएँ कैसे पूरी करते थे? जैसे, कपड़ों की आवश्यकता होती। बाजुल में हम भारत से श्री हरिरामजी चोपड़ा और श्री सोमभाद्र ने जगानिम्नान की मदद सहन

लायन कपट भेज दिये। फिर पर टोपी जोर पैरों में जूता की चरम्या कातुल म हमारा मेजबान श्री रामलाल आनन्द ने की और इस तरह तेह गन तन हम काह दिखत नहा हुद। बशर कातुल व जूते तेहरान तन नहा पहुँच सन। बहसहर म श्री अराम खियानी ने हमारे दृष्ट चूने देग कर ७ जाने मन ही मन क्या सोचा। वे उठे, हमसे कुछ कह गिना चल गिय। थोड़ी देर म हमन दगा रि य न जाडी जूते लिय चने जा रहे \*। हमारे आश्वय का ठिकाना न रहा। तेहरान क राद हम वष और रुमा मुर्दों क मुँह म जाना था। तेहरान क भारतीय व्यापारी श्री मकतन मिहची ने लगभग पाँच सौ रुपया खच करके 'स्लीपिंग बैग', स्प्रेटर, जूते और कोट का प्रग्रथ लिया। व कहने लगे "हम खुद आपन साथ चल नहीं सक्त, दगा तरह कुछ मन्द करन हम आपन 'मिगन' म साथ दे सक्त \*।" तेहरानवाग चने जुफा तन काफी प्रिस गये तो जुम्मा नगर पालिका क अयन न जूता की मरम्मत करवायी। सोवियत सघ ॥ पहुँचे। अरमीनियन गान्ति-परिषद् की मन्त्रिणी ने हमारे लिए ऐसी गपियाँ भेज कीं, जिह पहनने पर रूसी भी सर्दी का असर नहा हो सकता। और, नाक और मुँह को छोड़कर गल तक पूरा ढाँक सक, ऐसी ये टोपियाँ था। मार्को में हम पहुँचे तो लयनऊ से श्री कपिलभाद द्वारा भेजा हुआ और रैंग्लोर स डाक्टर नटराजन द्वारा भेजा हुआ गरम उपरों का पाकल हमारी प्रतीति कर रहा था। सोवियत शान्ति पागपन न आगमोट भट लिया। गरसा में राधाकृष्णजी राजाज द्वारा बधा से भेजे हुए तन और रागिगन्न म मुशीलुमारजी द्वारा राखपुरा म भेज हुए कपड़ भी इसी तरह सहायक रहे।

ब्रिगन ॥ अमेरिका तन हमें ब्रिटेन क शान्तिवाद लागा ने जहाज से भेजा, अमेरिका से जापान तक अमेरिका क पैसिफिस्ट लोगों ने हवाद जगन से भेजा और जापान से भारत तक जापान क शान्तिवादिया न जगन म भेजा। इस तरह विमर्दित गग से गारी व्यवस्था सहज होती गया।

डाक भेजने की परेशानी अवश्य कभी-कभी सताती थी। अक्सर तो हम अपने मेजबान को ही इससे लिए पृच्छते थे। यदि वैसी अनुकूलता न हो तो चिट्ठी लिफ्टर जेल में रख लेते और सड़क पर चलते हुए, प्रायः कोई न कोई कारवाला हमें 'लिफ्ट' देने के लिए या हमारे गारे में कुछ अलवारों में पड़ा होने के कारण कुल्लेक्षेम पठने के लिए अपनी कार रोकता, तो उसे हम टिकट लगाकर चिट्ठी भेज देने का काम सांप देते थे। टाब्रोज में तो हम गे नक्कर के 'डाइरेक्टर' के पास गये और १० १० 'एरोग्राम' ले लिये। इस तरह हम कोइन नौइ तराफ निराल ही लेते थे। किसी भी गहर में जब किसीने घर ठहरते, तो उनसे सातुन, डाक टिकट आदि की छोटी मोटी जरूरतें पूरत जासानी से पूरी कर लेते थे। इस में एक जगह दागी बनाने के लिए हमने अपने मेजबान से ब्लेड पृच्छा। उनसे पास ब्लेड नहा, उमरा था, जिससे दागी बनाने की हम जादत नहीं। हमारे मेजबान ने खुद अपने हाथ से ही हमारी दागी बना दी। कैसा दिलचस्प प्रसंग था यह रूम के एक छोटे-से गोंन में।

हमारे पास पैसा नहा है, यह जानकर तो लोग हमारी और भी ज्यादा चिन्ता करते थे। हमें अक्सर यह अनुभव ही नहीं होता था कि हमारे पास पैसा नहा है।

## साथ का सामान



हमारी यात्रा की पुरतेयारी का ज्यादा सम्बन्ध गहरी प्रश्ना में रहा था। सबसे गडी बात एक ही थी कि इस यात्रा के लिए हमारे मन में एक तडप थी और एक आकषण था। यह तडप इतनी तीव्र थी कि उमने सामने सभी प्रश्न या तो गौण होते चले गये या अपने आप मुल्यत चले गये। हम चारों ओर से इतनी शक्ति और स्फूर्ति मिला कि यात्रा का धीगणेश बन हो, इसाके इन्तजार में हम बेचैन रहन लगे। कई मित्रों ने इस लम्बी पदयात्रा में आनेवाले कष्टों, मुसीबतों और तन्लीफा की

जोर हमारा ध्यान रखा। पर हमने यही सोचा कि तफलीफ न आय तो यात्रा का मजा ही क्या ? इसलिए हर मुशकिल का, हर कष्ट का हम सामना करेंगे—यही हमारा निश्चय था। कुछ बुजुर्गों का हमारे 'मिशन' की सफलता में सन्देह भी था। पर हमने कहा कि कोई भी काम करने से पहले ही सफलता असफलता के लिए जो चिन्ता करता रहता है, वह कभी बड़ा काम कर ही नहीं सकता। हमारा साधन अच्छा है और उसके लिए हमने जो साधन अपनाया है, वह भी अच्छा है, तो फिर उस साधन में कुछ जाना ही हमारा काम है।

यात्रा में हमें जो भी आवश्यक सामान चाहिए था, वह हमने अपने साथ रखा। हम अपनी पीठ पर एक बैग में करीब १० किलो वजन रखते थे। इसमें व सभी चीजें आ जाती थीं, जिनकी हमें निरन्तर जरूरत पड़ती है। किसी भी गाँव में दा समय मोचन के बिना हम कुछ भी माँगना न पड़े, इस तरह से हमने सामान का प्रबंध किया। हमारे पास निम्नलिखित सामान रहता था

|             |                     |                    |
|-------------|---------------------|--------------------|
| १। चादर     | शॉर्ट पेन           | चाकू               |
| तीन पाचामे  | पुनरु दो            | रस्सी              |
| सान कुल     | लेजरपैट             | खुराल              |
| रूमाल       | पीठ का थैला         | आइडकम              |
| दो रनियायन  | दो गल थैल           | टिचरागटिन          |
| दो अहर्गियर | पानी की कुण्डी      | मैरिटोन            |
| तौलिया      | लोटा और मग          | ग्लोज              |
| रनकोट टोपा  | जादना, कपड़ा, तल    | पश्चिम की दाना     |
| बूट-जुता    | दस मल्ल             | रहीमेड चाय         |
| चपल जूता    | सातुन               | घटा                |
| गन्ध        | रेजर, ब्लेड और ग्रे | दान और कपड़े का    |
| रैमरा       | दो चम्मच            | गार्दन रोड         |
| थमस         | पिन कुशन            | बन्ट एग्लस और नरंग |

दो फाइल  
डायरी  
फाउन्डेन पेन

पेन डक  
कैंची  
नेल कटर

गद्गोश  
'रूसी भाषा शिक्षक'  
पुस्तक

पामपोर्ट !



पामपोर्ट के लिए हमने बहुत पहले ही मद्रास में से आवेदन किया था। किन्तु मद्रास में के पासपोर्ट अधिकारी ने 'राजनीतिक मामला' कहकर हमारा आवेदन-पत्र विदेश मन्त्रालय, दिल्ली को भेज दिया। सत्रमे पहला प्रश्न था, २० हजार रुपये की गारंटी का। इसे हम कैसे हल करते? हमारी जिम्मेदारी कौन उठाता? सुरक्षा की गारंटी कौन देता? जासिर फलकता के मेरे एक एडमिनेट मित्र मागीलाल जैन ने यह जिम्मेदारी ली। इन तरह सभी औपचारिक कार्रवाईयाँ पूरी हो जाने के बावजूद हम समय पर पासपोर्ट नहीं मिल सफ़ा। मद महीने की चिलचिलाती धूप जोर ल में हमने विदेश मन्त्रालय के कितने ही चक्कर लगाये। परन्तु लाल-फालगुन में कैसे कुछ हमारे कागजात मुक्ति नहीं पा सके। यद्यपि विदेश नागरिक होने के नाते हम पासपोर्ट जैसी चीज पर कोई विचार नहीं है, फिर भी हम सरकार तब भी सतुष्ट करने के लिए पासपोर्ट माँग रहे थे। जब हम अपने प्रयत्न में असफल रहे और गांधी समाधि, नया दिल्ली में अपनी पदयात्रा पर चलने लगे, तब हमारे हाथ खाली थे। दूसरे ही दिन एक दिन अखबार ने यह समाचार छपा कि "दो भारतीय शान्ति यात्री दिल्ली से अमेरिका तक की पदयात्रा पर निकले हैं, किन्तु उनकी चेन में न तो पैसा है और न हाथ में पामपोर्ट।"

इस तरह न कुछ गलतली मचायी। लोकसभा के एक सदस्य की यह प्रश्न पृष्ठ की प्रेरणा मिली कि जब हमारे मंत्रिगण तरह-तरह के लोगों को, व्यापारियों को, अपने सम्बन्धियों को नये नये कारण ढूँढ़कर विदेश यात्रा पर भेज दते हैं, तो इन शान्ति-यात्रियों को पासपोर्ट देने में

क्या गाथा हो सकती है ? मामूली म नीति मग्न था तो कोद गाथा थी भी नहीं । दफ्तरों में चलनवाली निधित्ता और भ्रष्टाचार हा इसमें पोछे कारण हो सकता था । पर हमने यही तय किया कि जा भा हो, हम वापस नहीं आयेंगे और अपने कार्यक्रम के अनुसार आगे बढ़ जायेंगे । अपने कार्यक्रम में फेर बदल न करने की हमारी इच्छा का कारण था हमने राष्ट्रपति राधाकृष्णन् से मिलन का विचार भी रह कर लिया । कारण, राष्ट्रपति ने हमें ३ जून को मिलन का समय दिया था और हम पहली जून को ही दिल्ली से चल पग्न का निश्चय कर चुके थे । पामपाट के लिए दिल्ली में पहली जून के बाद रुकना हमने उचित नहीं समझा और अपनी यात्रा शुरू कर दी । जब हम पाकिस्तान की सरहद के पास पहुँच गये थे, तो दिल्ली से एक भाई आये और बोले “गाति-यात्रिया, यह लीजिये आपका पासपोर्ट ।”

पाकिस्तान की सरहद तक हमने ३२ दिन यात्रा की ।

पंजाब का हमारा कार्यक्रम जयंत उत्साहमय रहा । पानीपत, जन्माला, राजपुरा, उजियाना, तदमपुर, जालंधर और जमृतसर का सम्पूर्ण कार्यक्रम इतना यत्न और स्फूर्तिदायक रहा कि अब भी वह भारी यात्रा चलाने की भाँति लगती है । हमने है । सभी जगह नयी रक्षा ताम सभाएँ, निगरानियों और युवकों की सभाएँ, बुद्धिजावियों की सभाएँ हुई । दिल्ली से खाना होत समय हम इसका आनंद भी नही था कि पंजाब में हमारा कार्यक्रम इतना सफल रहेगा ।

हमने देखा कि सब जगह आणखि इधियाय का गिलाफ जनता का हृदय तैयार है । पर उसे यह समय में नहीं आ रहा है कि गिन तरीकों में इसका विरोध किया जाय ।



पड़ोसी देश पाकिस्तान में



